विवादों से परे लिखी जाए प्रेमचंद की जीवनी- डॉ. प्रदीप जैन

हिंदी विश्वविद्यालय में प्रेमचंद जयंती समारोह, साहित्य विद्यापीठ dkका आयोजन

वर्धा दि. 01 अगस्त 2012: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में साहित्य विद्यापीठ की ओर से में हिंदी के महान कथाकार प्रेमचंद की जयंती के अवसर पर मंगलवार को 'प्रेमचंद की जीवनी का सवाल' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में प्रेमचंद साहित्य के चर्चित अन्वेषक डॉ. प्रदीप जैन ने कहा कि प्रेमचंद के संपूर्ण साहित्य और जीवन को सामने लाने के लिए उनकी जीवनी नये सिरे से लिखे जाने की आवश्यकता है। प्रेमचंद द्वारा लिखित सहित्य के तथ्य निर्धारण के बारे में अनेक विवाद हुए हैं। उनके अनेक पत्रों पर कही तिथि तो कही साल का उल्लेख नहीं मिल पाता। पत्रों की तिथियां प्रामाणिक न हो ने से भ्रम की स्थिति बनी रहती है। इस वजह से उनके साहित्य के प्रभाव को रेखांकित करने में कठिनाईयां होती हैं और उनकी रचनाप्रक्रिया व मानसिकता में आए अंतर को रेखांकित नहीं किया जा सकता। उनकी सही जीवनी लिखी जाए और वह विवादों से परे होनी चाहिए। प्रेमचंद की प्रामाणिक जीवनी लिखने के लिए हिंदी और उर्दू का ज्ञान होना एक अनिवार्य शर्त है।

विश्वविद्यालय के हबीब तनवीर सभागार में आयोजित समारोह की अध्यक्षता प्रतिकुलपति प्रो. ए. अरविंदाक्षन ने की। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में आलोचक, कथाकार तथा विवि के अतिथि लेखक विजय मोहन सिंह ।तथा आलोचक एवं साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. सूरज पालीवाल मंचस्थ थे।

डॉ. प्रदीप जैन ने आगे कहा कि प्रेमचंद की प्रामाणिक जीवनी लिखी जानी चाहिए। उनसे जुड़े संस्मरण, उनकी प्रशंसा और विरोध में लिखे गये लेख, समकालीन साहित्य संसार में प्रकाशित समीक्षाएं और पांण्डुलिपियां आदि उनकी जीवनी का एक प्रमुख आधार है। विशिष्ट अतिथि के रूप में विजय मोहन सिंह ने कहा कि प्रेमचंद की कथाभाषा ने हिंदी और उर्दू का द्वैत और द्वंद्व समाप्त कर दिया और इससे हिंदी की कथाभाषा धर्मनिरपेक्ष रूप में विकसित हुई। प्रेमचंद ने अपने समय से आगे का लेखन किया। असल में हिंदी के वास्तविक दलित लेखन की शुरूआत उन्होंने गोदान के माध्यम से की है। उनकी इस उंचाई को अभी तक कोई छूं न सका। विषय प्रवर्तन करते हुए साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. सूरज पालीवाल ने कहा कि 132 वर्ष पूर्व जन्में प्रेमचंद ने जिस प्रकार कथासाहित्य में उपन्यास को लाया वैसा परिपक्व उपन्यास उनके बाद नहीं आ पाया। हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद अपना सर्वश्रेष्ठ देकर गये। उन्होंने एक प्रकार से छलॉग लगायी। जीवनी को निष्पक्ष होना ही चाहिए। यदि हम प्रेमचंद मे दोष ढुढ़ेगे तो उन्हें बड़े कैसे सिद्ध कर पायेंगे। उन्होंने खेद जताते हुए कहा कि प्रेमचंद को मूर्ति और आदर्श के सॉचे में खड़ा करने की कोशिश की जा रही है, इससे उनका व्यक्तित्व व कृतित्व करजोर हो रहा है। उन्होंने माना कि गोदान नहीं होता तो हिंदी की बड़ी क्षति होती। अध्यक्षीय उदबोधन में प्रतिकुलपति प्रो. ए. अरविंदाक्षन ने कहा कि प्रेमचंद के साहित्य पर चर्चा के बहाने विश्वविद्यालय द्वारा लेखक, शोधार्थी एवं विद्यार्थियों से सार्थक रचनाएं मंगायी जाए और एक मौलिक ग्रंथ प्रकाशित किया जाए। इस अवसर पर हिंदी समय के संपादक राजकिशोर ने प्रेमचंद के आदर्शोन्मुख यथार्थवाद पर अपनी बात रखी। समारोह का संचालन साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. सूरज पालीवाल ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन साहित्य विद्यापीठ के प्रो. के. के. सिंह ने प्रस्तुत किया। समारोह में अध्यापक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

बी. एस. मिरगे, जनसंपर्क अधिकारी